ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
July-September 2024 : 1(4)58-59
©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

हेमा जोशी परु
खटीमा,ऊधम सिंह नगर,
उत्तराखंड.पिन-262308

Corresponding Author :
हेमा जोशी परु
खटीमा,ऊधम सिंह नगर,
उत्तराखंड.पिन-262308

कहानी :-

आख़िरी मुलाक़ात

बहुत कुछ बदल गया हैं तुम्हारें बाद, मगर कुछ ख़ास नहीं बदला।

मैं जब जब तुमसे मिलती थी, अनजाने भय से कहती थी, तुम बदल तो नहीं जाओगे?

तुम्हारा हंसते हुए देखना फिर कहना,

संसार हैं ये।…औऱ परिवर्तन तो नियम हैं।

ये निरन्तरता ईश्वर प्रदत्त हैं,ये जारी रहेगी।

कैसे इतने सरल शब्दों में कह देते हो तुम ये सब...।

मैं तुम्हारी ओर देख के कहती..., इतने भी अज़नबी मत बन जाना कि हम सामने खड़े हो तुम पहचान न पाओ।

फिर माहौल में चुप्पी छा जाती।

तुम जीवन के मैदान में बहुत ज्यादा प्रैक्टिकल थे,

औऱ मैं भावनात्मक हृदय की लड़की।

हर बार लौटते हुए मैं कहती....

अब शायद कभी नहीं मिलेंगे हम,

शायद ये अंतिम मुलाक़ात हैं हमारी।

अब तो गले लगा लो।

तुम डांट देते....चुप.....

ये आखिरी मुलाक़ात नहीं हैं,वो तब होगी...,

जिस दिन मैं तुम्हारें लिए गीत गाऊंगा,तुम्हें कस के गले लगाऊंगा।

औऱ मेरा गीत जारी रहेगा।

उस दिन तुम स्वयं आये थे मिलने।

मगर मैं नहीं जानती थी कि ये हमारी आखिरी मुलाक़ात हैं।

जाते हुए तुमने कहा अच्छा चलता हूँ।

उस अंतिम दिन तुमने न कोई गीत गाया,न गले लगाया।

मैंने आज तक उस दिन को अंतिम दिन न माना हैं न मानूँगी।

मैं केवल तुम्हारें गले नहीं लगना चाहती थी,मैं अपने सब रंज,सब पीड़ा बहा देना चाहती थी तुम्हारें मजबूत कंधों में।

मुझें लगता था कि तुमसे मजबूत औऱ कोई सहारा नहीं होगा मेरे आँसुओ के ठहरने का।

मैंने आज भी अपने छिन्न भिन्न मन को...,

आँखों मे भरें नमकीन जल को बचा के रखा हैं कि तुम एक दिन गीत गाते हुए आओगे मुझें गले लगा लोगे।

उस रोज मैं इतना रोऊँगी कि तुम पिघल जाओगे मेरी पीड़ा से।

बिना तुम्हारें भी सब सही चल रहा हैं लेकिन एक टीस हैं भीतर कही।

जिससे रिसती रहती हैं पीर,घाव ही घाव हैं भीतर।

समाज हँसता हुआ देखता हैं मुझें,केवल चंद लोग हैं जो वाकिफ़ हैं मेरी खोखली हँसी से,जिन्हें इंतज़ार हैं मेरे आंखों में ठहरे पानी के बह जाने का।

आज भी कुछ नहीं बदला हैं।... सब यथावत हैं।

मैं अब भी जाती हूँ हर की पौड़ी।

वहाँ घंटो बैठकर लहरों को निहारती रहती हूँ इस आस में कि प्रथम दिवस जैसे तुम कही से आओगे औऱ कहोगे उठो स्नान कर लो। तुम्हें याद हैं वो शिव मंदिर...., जहां तुम मुझें मेरा हाथ पकड़ के ले गए थे, तुम कितने लंबे कदम चलते, मैं थक जाती थी तुम्हारें साथ। रिक्शा कर लो ना मैं थक गई,अब नहीं चला जाता मुझसे....., तुम इतने लंबे कदम भरते हो, हाँजी तो मैं लंबा भी तो हूँ.. छोटी लड़की..।

मैं कहती मजाक बना रहे हो मेरी लंबाई का,

तुम कहते नहीं...

ये तो शिवजी ने तय किया हैं कि तुम छोटी रहो,ताकि जब गले लगाऊ तो मेरे हृदय में बस जाओ।

और सुनो....,

अभी से थक जाओगी तो कैसे तय करोगी मेरे साथ आगे की यात्रा...वो तो बहुत कठिन हैं हेमू।

मैं कहती चल दूंगी।

मंदिर पहुँच कर तुम ध्यान में डूब जाते...,

मैं चंचल स्वभाव की,ध्यान लगाती उठ जाती।

तुम कहते ध्यान लगा लो भोलेनाथ में,औघड़ हैं वो,तुम तर जाओगी।

मैं कहती तुम भी औघड़ ही लगते हो मुझें...सुन के हँस देते तुम।

अब मैं अकेले ही हो आती हूँ शिव मंदिर...अब समझ आ रहा हैं कि सती यदि तपती नहीं तो कहा प्राप्त होते शिव।

शायद मैं भी तप में हूँ।

ऐसा लगता हैं इन सब मे एक सदी गुज़र गयी,लेकिन हृदय की रिक्तता नहीं भरी।

आज भी मेरे कान तुम्हारें गीतों को सुनने को तरस गए हैं।

हां ये बात औऱ हैं कि तुम्हारें कई रिकार्डेड गीत आज भी मेरे पास हैं।

लेकिन मुझें उस गीत का इंतज़ार हैं जिसमें तुम मुझें गले लगाए होगे।

न जाने वो आखिरी मुलाक़ात कब मुकम्मल होगी...,

जब तुम आओगे....।

मिलन के गीत गाओगे...।

मुझें गले लगाओगे.....।

उम्मीद हैं मुझें...,

जीवन के अंतिम क्षणों में ही सही,

तुम आओगे,

आख़िरी मुलाक़ात के लिए।

तुम्हारी प्रिय परु।

●